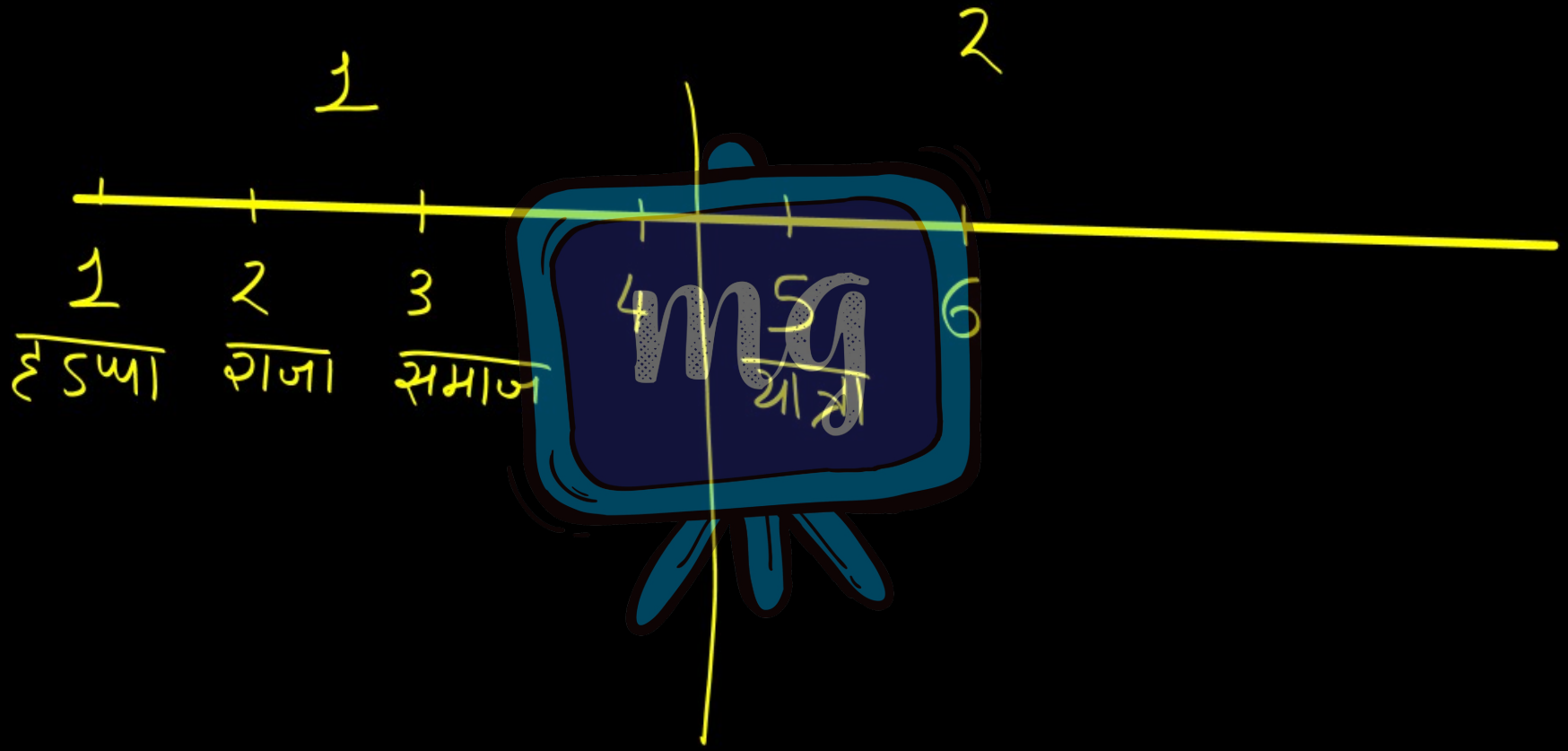

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
12th HISTORY
ई-पाठशाला
भक्ति-सूफी
परंपराएं
ONE SHOT
पूरा चैप्टर एक ही क्लास में ...
LIVE | 29 सितंबर 2026 | 03:30 PM

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

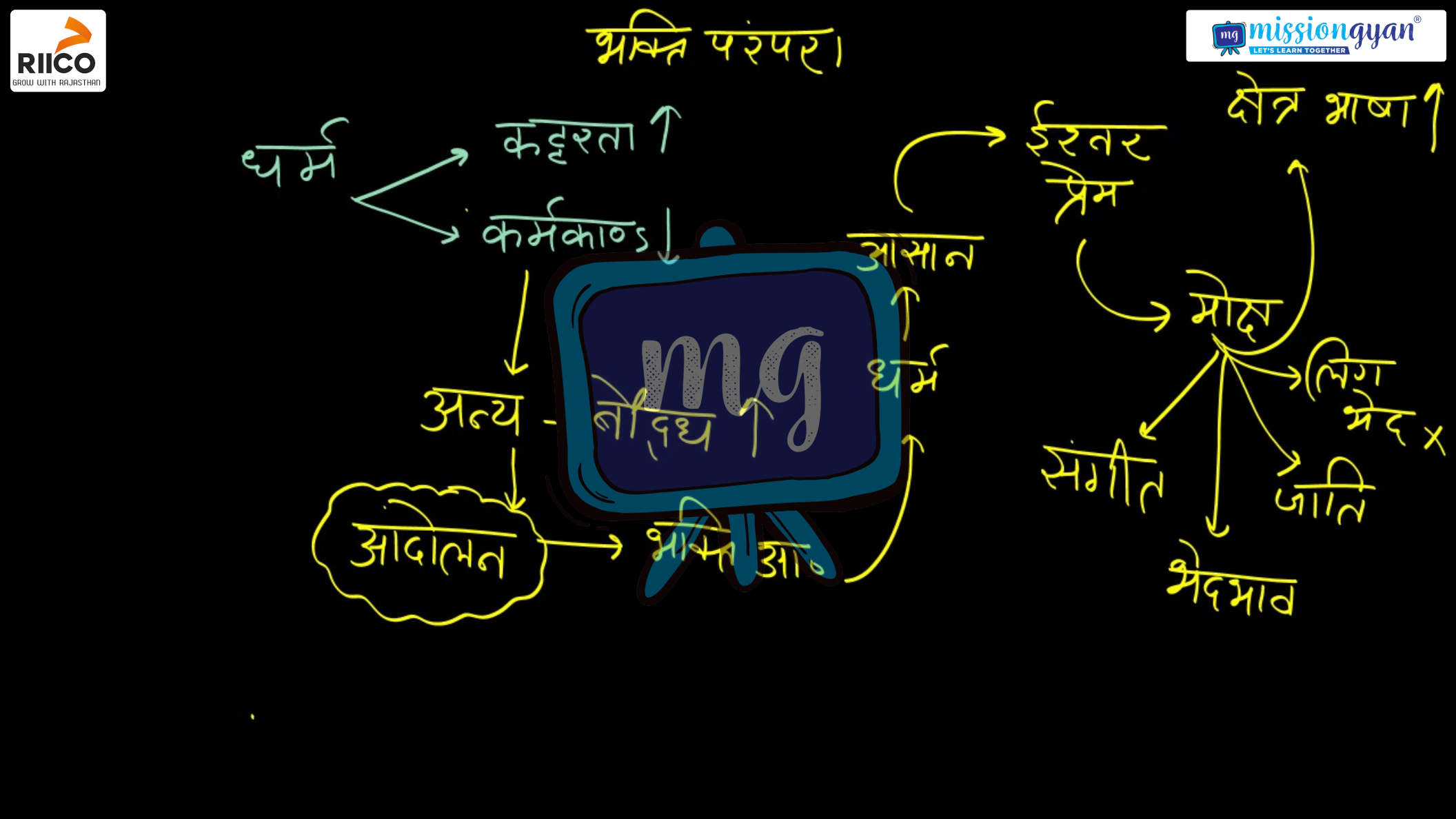
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

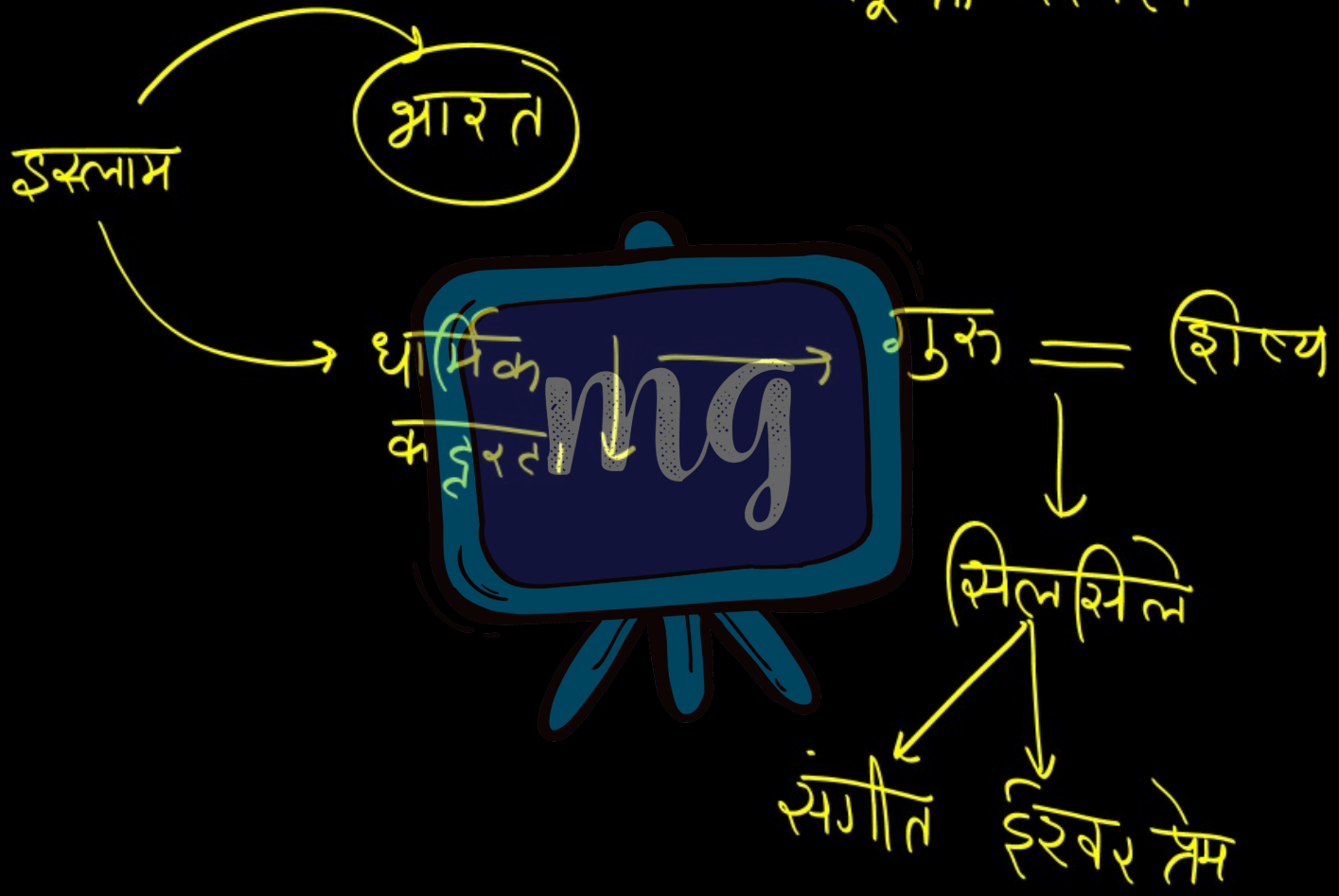
भक्ति परंपरा।

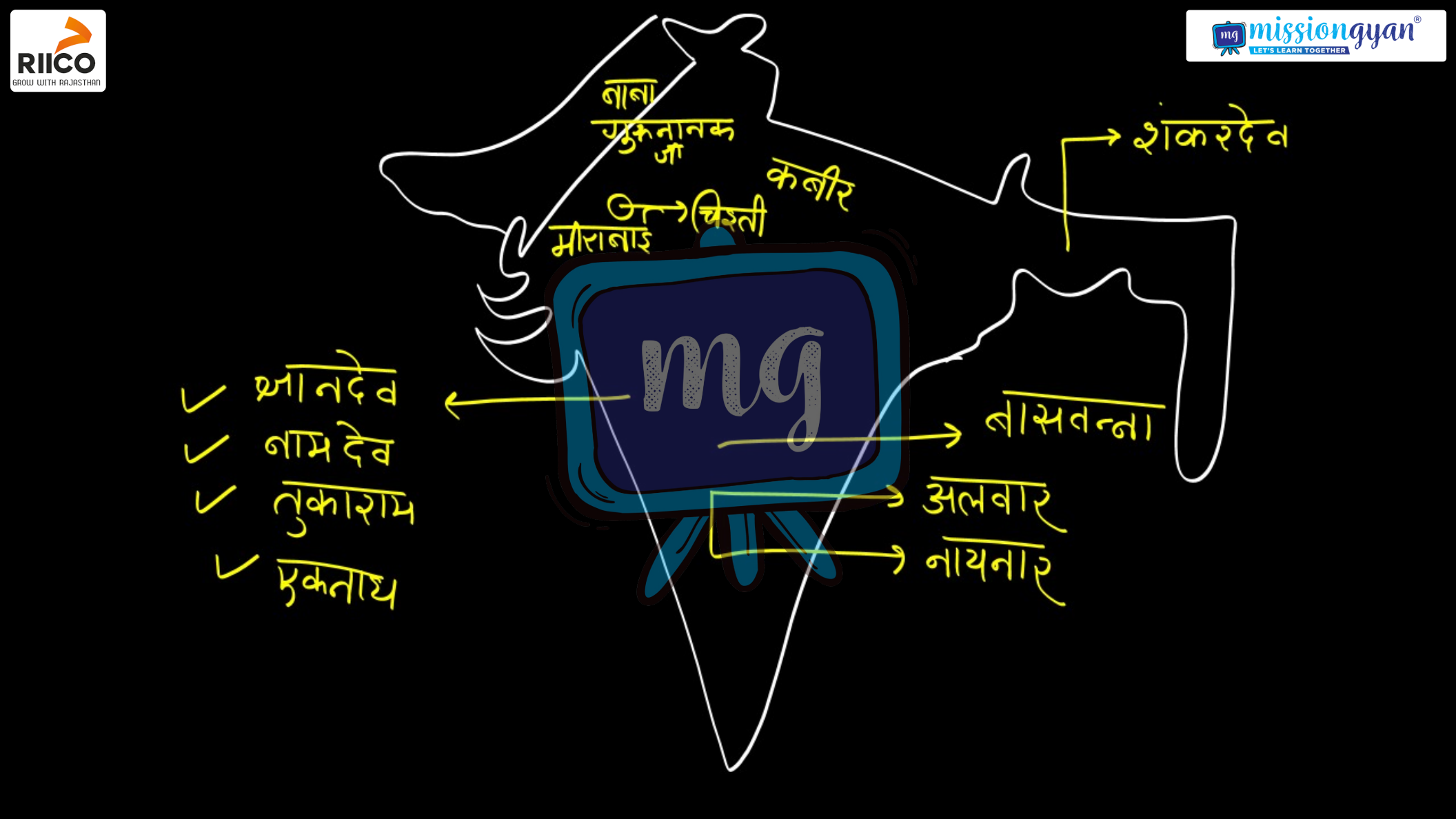


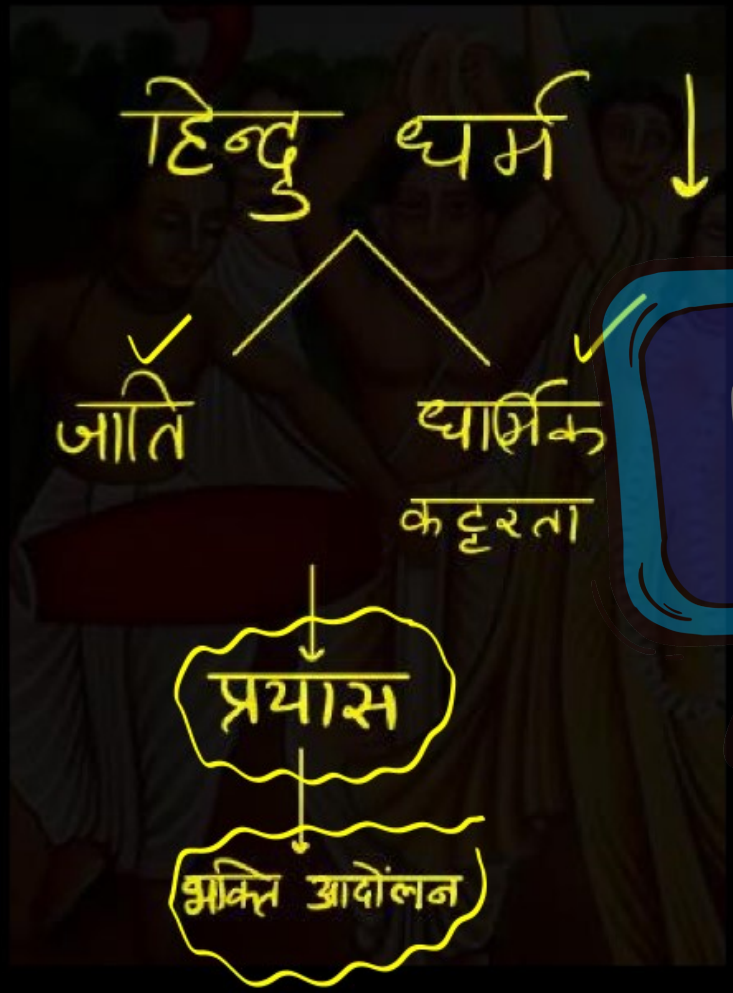
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सूफी परंपरा

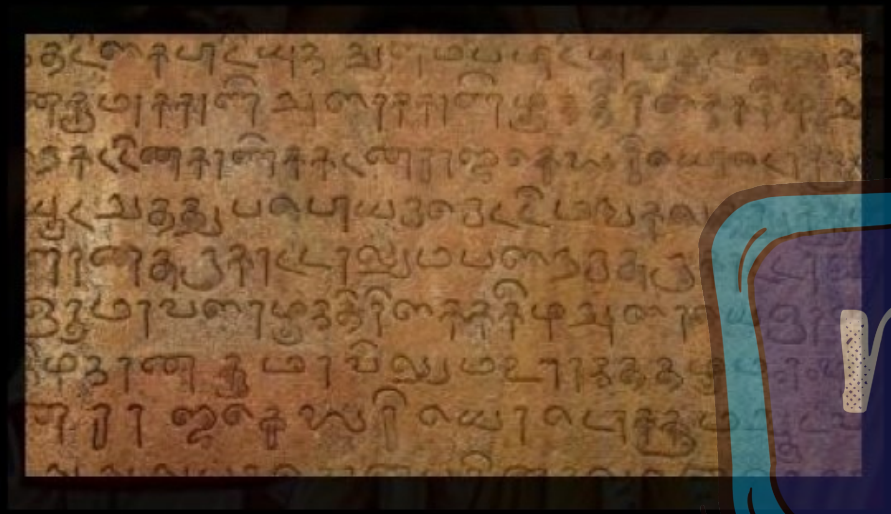



नाना
गुरुनानक जी
कबीर
चिश्ती
मीराबाई
शंकरदेव
ज्ञानदेव
नामदेव
तुकाराम
एकनाथ
बासवन्ना
अलवार
नायनार



- इन सुधारकों ने हिन्दु धर्म के बाह्यआडम्बरों, जाति-व्यवस्था तथा धार्मिक कट्टरता का विरोध किया एवं हिन्दु धर्म में सुधार का प्रयास किया।
- भक्ति आंदोलन व्यापक था और सम्पूर्ण देश में उसका प्रसार हुआ।
- बौध धर्म के पतन के बाद भारत में इतना व्यापक व लोकप्रिय अन्य कोई आंदोलन नहीं हुआ।

Q. भक्ति आ० ?



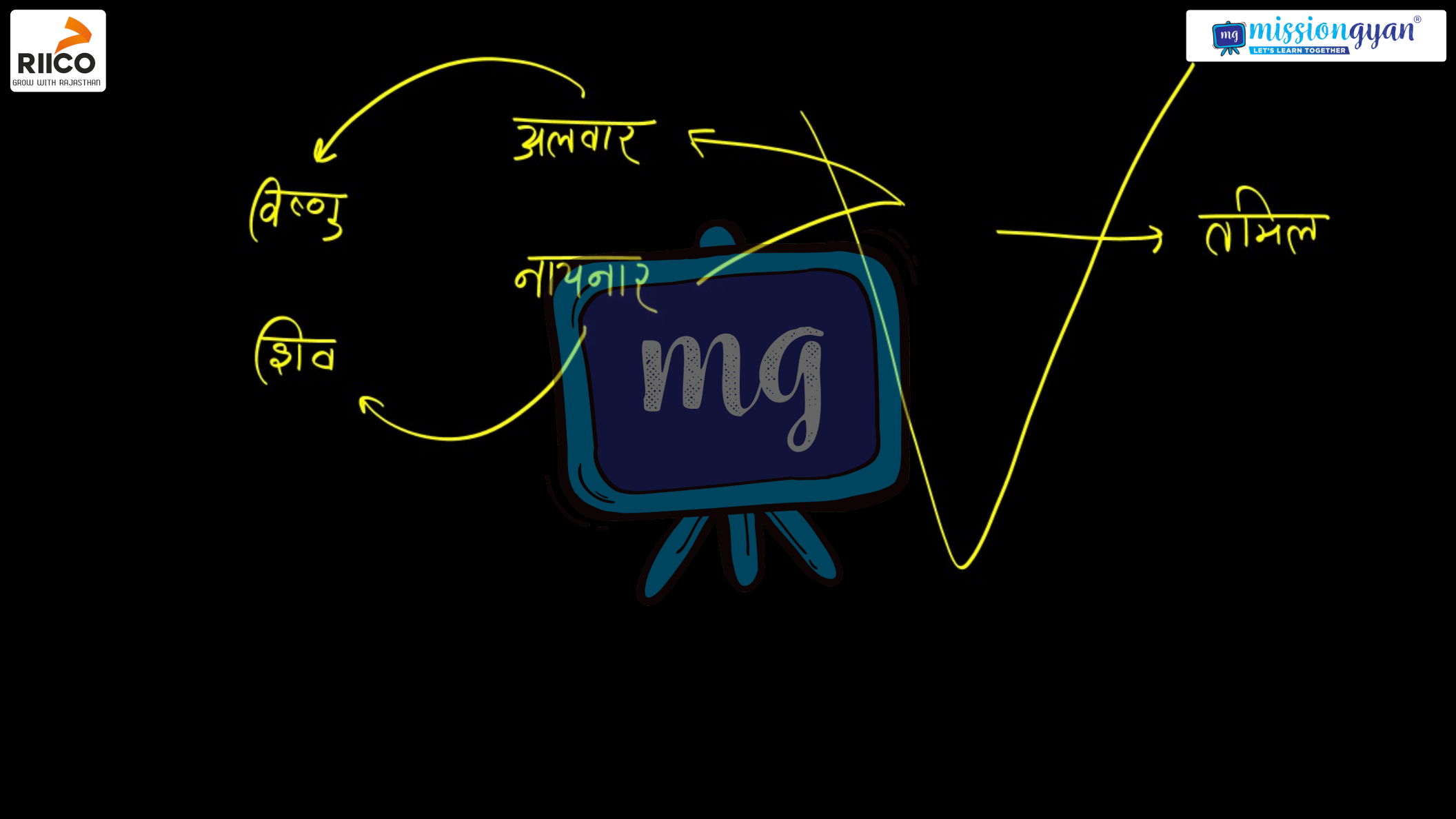
Q.

- इस आंदोलन का ठोस परिणाम यह हुआ कि प्रान्तीय भाषाओं के साहित्य का उत्कर्ष हुआ।
- इन संतों ने जन साधारण की भाषा में उपदेश दिये जिससे हिंदी, बंगाली, मराठी, मैथिल, तमिल, तेलगू आदि भाषाऐं समुन्नत हुई।
- इसी कारण भक्ति आन्दोलन के काल को प्रान्तीय भाषाओं के विकास की दृष्टि से स्वर्णयुग कहा जा सकता है।

Q. भक्ति आ० ?

Q. भक्ति आ० के काल को प्रान्तीय भाषा के स्वर्णिम काल के तौर पर क्यों जाना जाता था?



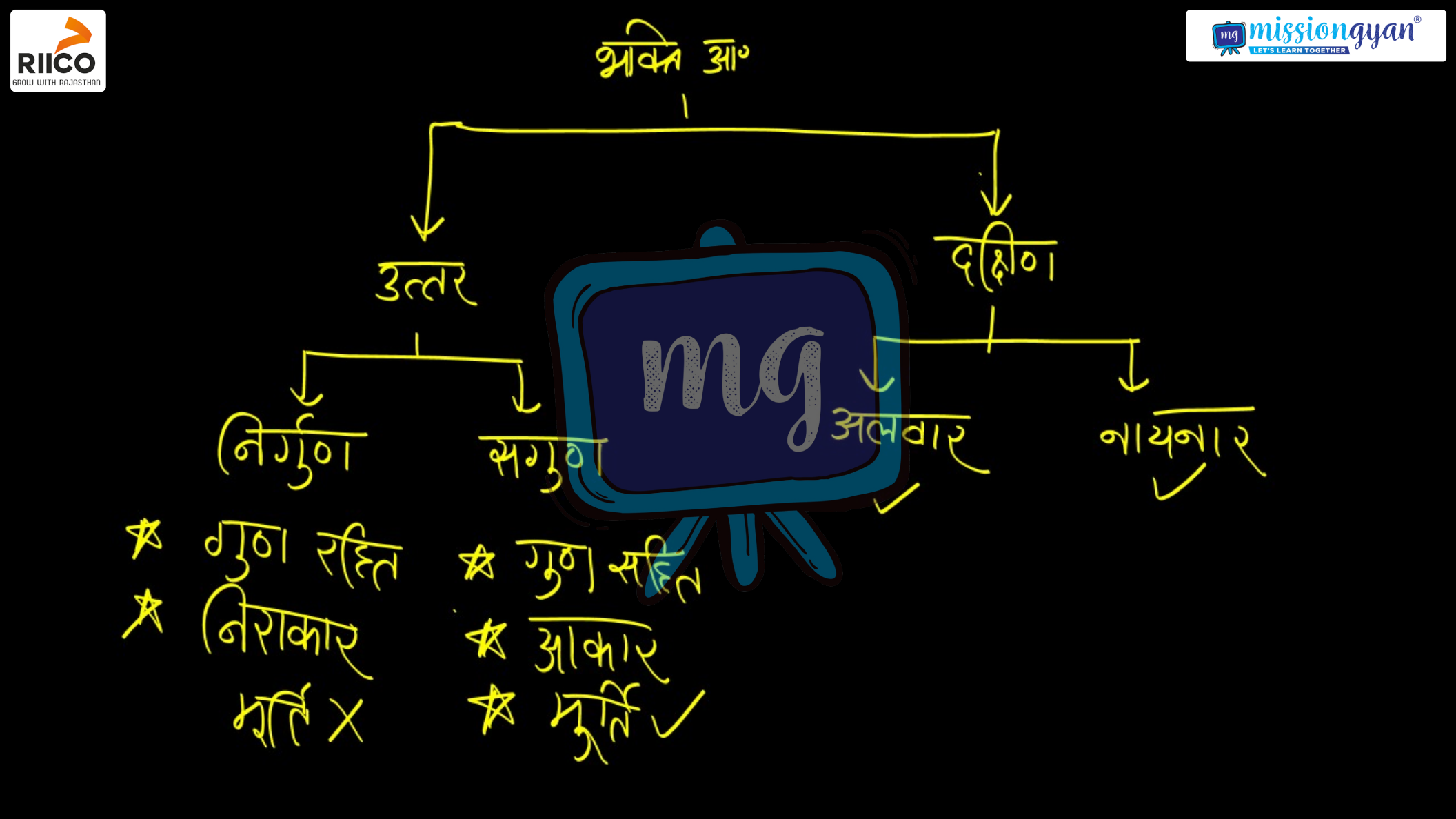

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
अलवार
विष्णु
नायनार
शिव
तमिल
mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- भक्ति आन्दोलन का उदय दक्षिण भारत में हुआ।
  1. **अलवार संत :-** ये विष्णु भक्त थे।
     कुल संख्या = 63
  2. **नयनार संत :-** ये शिव भक्त थे।
     कुल संख्या = 12
- इसके बाद भक्ति आन्दोलन महाराष्ट्र में लोकप्रिय हुआ।

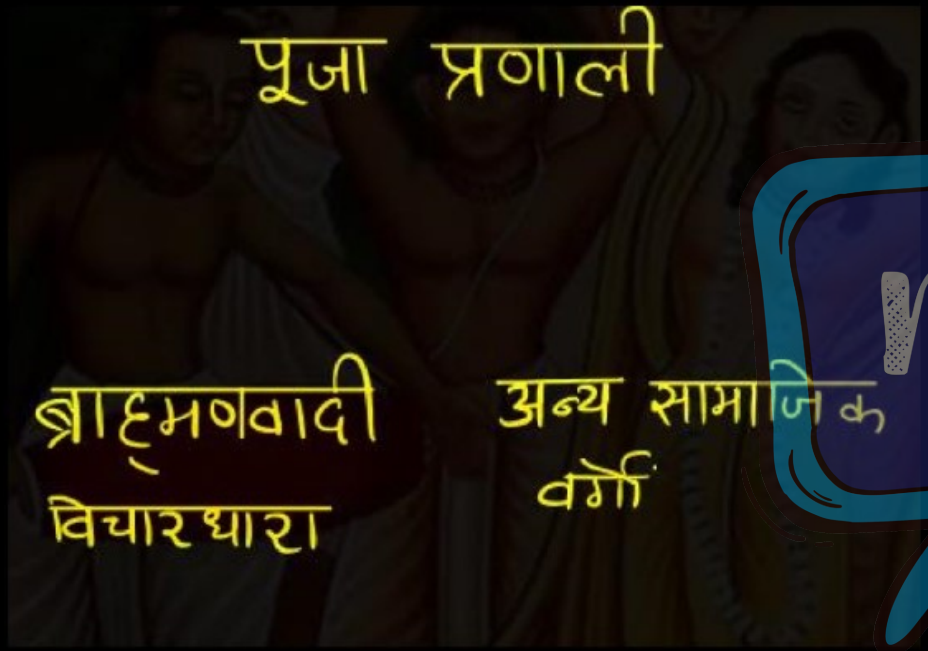

भक्ति आं०
उत्तर
दक्षिण
निर्गुण
सगुण
अलवार
नायनार
★ गुण रहित
★ निराकार
मूर्ति ×
★ गुण सहित
★ आकार
★ मूर्ति ✓

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- महाराष्ट्र के प्रमुख संत :- ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम ।
- उत्तर भारत में संत रामानन्द के द्वारा भक्ति आन्दोलन को लोकप्रिय बनाया गया।
- भक्ति आन्दोलन की दो धाराएँ थी-
  1. निर्गुण भक्ति
  2. सगुण भक्ति
- भक्ति आन्दोलन के समानान्तर इस्लाम धर्म में सूफी आन्दोलन चला।



पूजा प्रणालियों का समन्वय :-

- इतिहासकारों के अनुसार पूजा प्रणाली में दो प्रक्रियाएँ थीं।
- 1. पहली प्रक्रिया ब्राह्मणवादी विचारधारा के प्रसार से जुड़ी थी, जिसका प्रचार पौराणिक ग्रंथों के संकलन और रचना द्वारा किया गया।
- 2. दूसरी प्रक्रिया में ब्राह्मणों ने विभिन्न सामाजिक वर्गों की आस्थाओं व परंपराओं को स्वीकार कर नया रूप दिया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- समाजशास्त्रियों ने सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में फैली हुई अनेक धार्मिक विचारधाराओं और पद्धतियों को 'महान' संस्कृत पौराणिक परिपाटी एवं "लघु" परम्पराओं के बीच पारस्परिक संवाद का परिणाम बताया है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

"महान" और "लघु" परंपराएँ

महान और लघु परंपराएँ –

रॉबर्ट रेडफील्ड के अनुसार–

- **महान परंपरा :** प्रभुत्वशाली वर्ग द्वारा अपनाई गई परंपराएँ।
- **लघु परंपरा :** कृषक व स्थानीय समुदायों की लोक परंपराएँ।
- दोनों परंपराएँ आपसी आदान-प्रदान से बदलती रहती हैं।

उदाहरण : पुरी के स्थानीय देवता जगन्नाथ को बाद में विष्णु के रूप में स्वीकार किया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

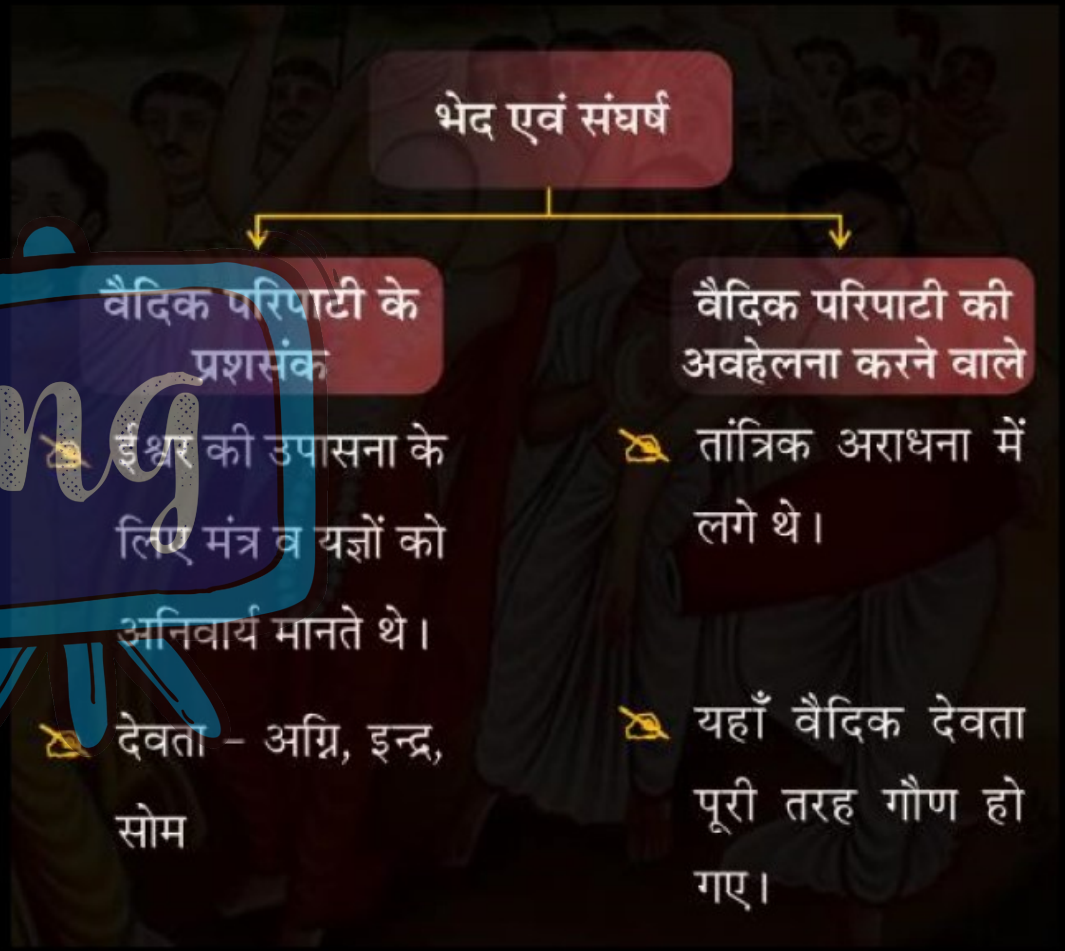
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. महान ओरलव्यु परंपरा क्या थी?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उपासना की कविताएँ :-

- भक्ति परम्परा का वर्णन करने वाले इतिहासकार इसे दो मुख्य वर्गों में बाँटते हैं -

1. सगुण (विशेषण सहित) :- सगुण भक्ति धारा में शिव, विष्णु तथा उनके अवतार व देवियों की आराधना की जाती थी, जिनकी मूर्त रूप में अवधारणा हुई।
2. निर्गुण (विशेषण विहीन) : निर्गुण भक्ति परम्परा में अमूर्त, निराकार ईश्वर की उपासना की जाती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

तमिलनाडु के अलवार और नयनार संत :-

- 6वीं शताब्दी में अलवार (विष्णु भक्त) और नयनार (शिव भक्त) प्रमुख संत थे।
- वे घूम-घूमकर भजन गाते और पवित्र स्थानों को महत्व देते थे।
- बाद में इन स्थानों पर मंदिर और तीर्थ स्थल बने।
- मंदिरों में उनके भजन गाए गए और मूर्तियों की पूजा हुई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जाति के प्रति दृष्टिकोण

- अलवार और नयनार संतों ने जाति प्रथा व ब्राह्मणों की प्रभुता के विरोध में आवाज़ उठाई।
- भक्ति संत विविध समुदायों से थे जैसे ब्राह्मण, शिल्पकार, किसान और कुछ तो उन जातियों से आए थे जिन्हें "अस्पृश्य" माना जाता था।
- अलवार संतों के एक मुख्य काव्य संकलन नलयिरादिव्यप्रबंधम् का वर्णन तमिल वेद के रूप में किया जाता था। इस तरह इस ग्रंथ का महत्व संस्कृत के चारों वेदों जितना बताया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

स्त्री भक्त :-

- दक्षिण भारत की भक्ति परंपरा में स्त्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका थी।
- अंडाल विष्णु भक्त और करइक्काल अम्मैयार शिव भक्त थीं।
- उन्होंने सामाजिक बंधनों को चुनौती देकर भक्ति का मार्ग अपनाया।
- उनकी रचनाएँ आज भी भक्ति परंपरा में महत्वपूर्ण हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

तमिल वेद

भक्ति साहित्य का संकलन

- 10वीं शताब्दी तक अलवार संतों की रचनाएँ "नलायिरादिव्यप्रबंधम्" में संकलित हुईं।
- अप्पार, संबंदर और सुंदरार की रचनाएँ "तेवरम्" राज्य से संबंध
- पल्लव और पांड्य राज्यों के समय जैन-बौद्ध धर्म भी प्रभावशाली थे।
- भक्ति संतों ने जैन और बौद्ध धर्म का विरोध किया।
- चोल शासकों ने ब्राह्मणीय और भक्ति परंपरा को संरक्षण दिया।
- चिदंबरम, तंजावुर और गंगैकोंडचोलपुरम में विशाल शिव मंदिर बने।



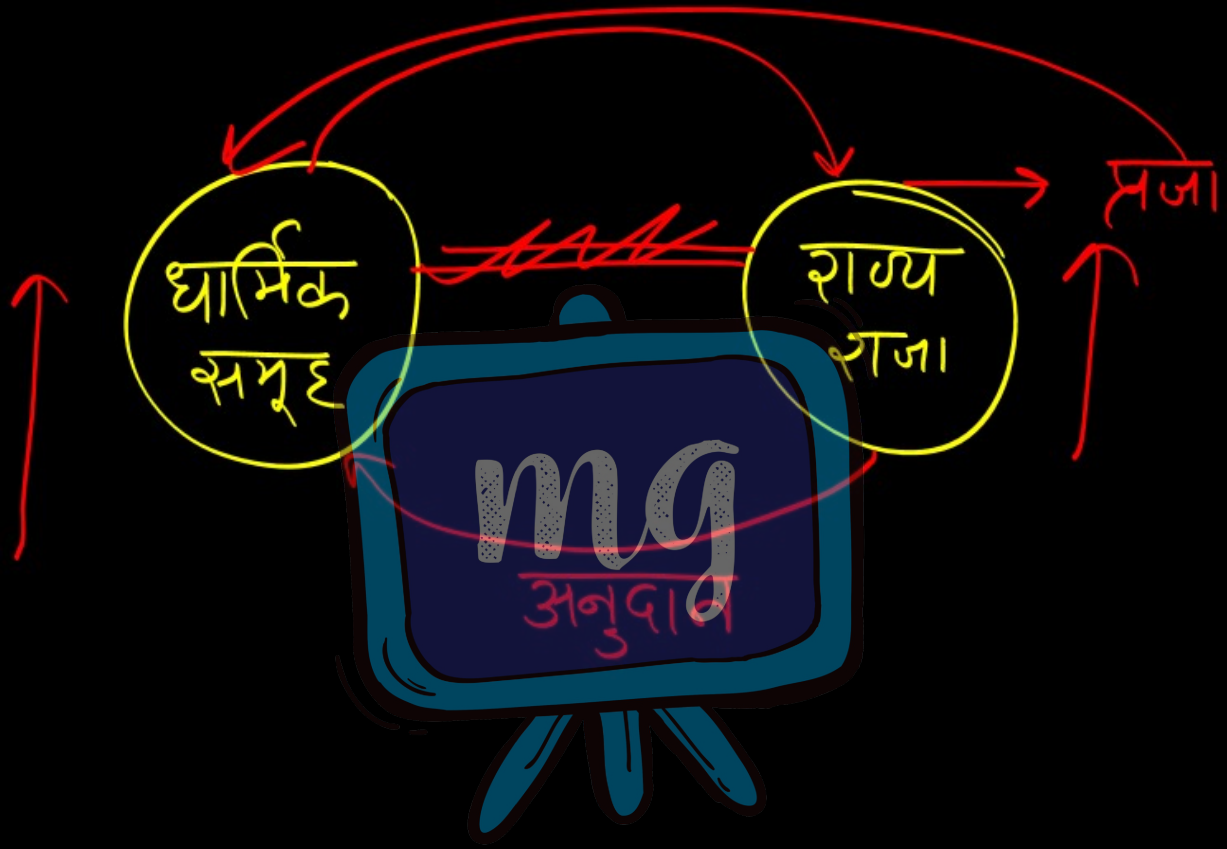
चिदम्बरम



तंजावुर



गंगैकोंडचोलपुरम


धार्मिक समूह
राज्य राजा
प्रजा
mg
अनुदान

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- चोल काल में कांस्य शिव प्रतिमाएँ बनाई गईं।
- अलवार व नयनार संतों को वेल्लाल कृषकों का सम्मान मिला।
- चोल शासकों ने उनका समर्थन पाने का प्रयास किया।
- उन्होंने दैवीय समर्थन का दावा कर भव्य मंदिर बनवाए।
- मंदिरों में पत्थर व धातु की मूर्तियाँ स्थापित की गईं।
- परांतक प्रथम ने अप्पार, संबंदर और सुंदरार की धातु प्रतिमाएँ स्थापित करवाईं, जिन्हें उत्सवों में जुलूस में निकाला जाता था।


mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बासवन्ना

- ये कलचुरी के राजा के दरबार में मंत्री थे।
- इनके अनुयायी वीरशैव (शिव के वीर) व लिंगायत कहलाए।
- ये शिव की आराधना लिंग के रूप में करते है।
- लिंगायत समुदाय के पुरुष वाम स्कंध (बायां कंधा) पर चाँदी के एक पिटारे में एक लघु लिंग को धारण करते हैं।
- लिंगायतों ने जाति की अवधारणा और कुछ समुदायों के "दूषित" होने की ब्राह्मणीय अवधारणा का विरोध किया।
- पुनर्जन्म के सिद्धान्तों पर भी प्रश्न चिह्न लगाया।
- इन सब कारणों से ही ब्रह्मणीय सामाजिक व्यवस्था में जिन समुदायों को गौण स्थान मिला था वे लिंगायतों के अनुयायी हो गए।
- लिंगायतों ने वयस्क विवाह और विधवा पुनर्विवाह आदि को भी मान्यता प्रदान की, जिन्हे धर्मशास्त्रों में अस्वीकार किया गया था।


mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तरी भारत में धार्मिक उफान

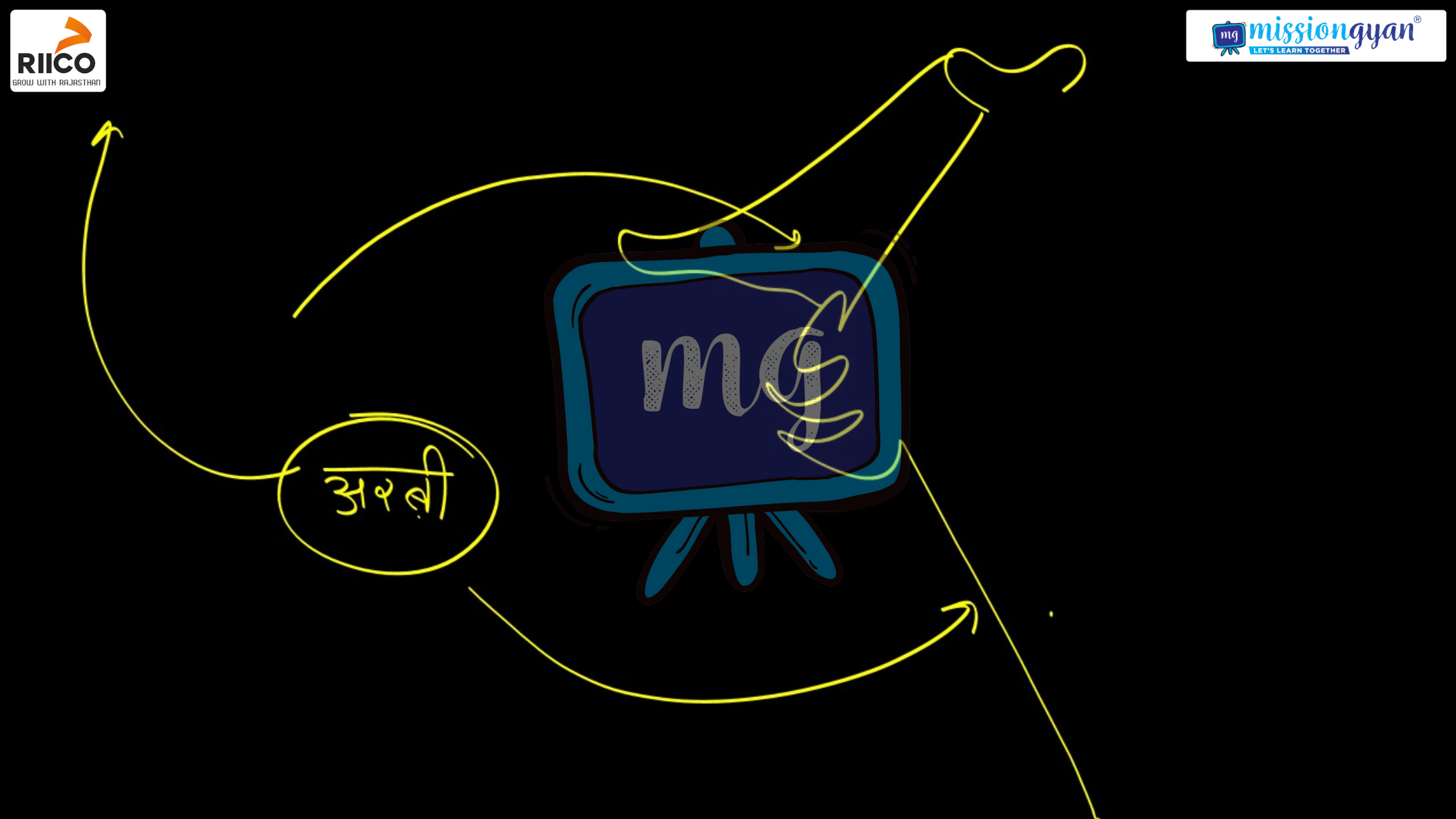
- 14 वीं शताब्दी तक उत्तरी भारत में अलवार और नयनार संतों की रचनाओं जैसा कोई ग्रन्थ प्राप्त नहीं हुआ।
- हालांकि उत्तरी भारत में भी विष्णु और शिव जैसे देवताओं की उपासना मंदिरों में की जाती थी।
- इस भिन्नता की क्या वजह हो सकती है ?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कुछ इतिहासकारों का मत है कि-

- उत्तर भारत में राजपूत राज्यों में ब्राह्मणों का प्रभाव था।
- नए धार्मिक नेताओं ने वैदिक परंपराओं को चुनौती दी।
- तुर्कों के आगमन और दिल्ली सल्तनत से राजनीतिक व धार्मिक बदलाव हुए।
- इन परिवर्तनों के साथ सूफी परंपरा का भी प्रसार हुआ।


RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
अरबी
mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दुशाले के नए ताने-बानेः इस्लामी परंपराएँ

- प्रथम सहस्त्राब्दी ईसवी में अरब व्यापारी समुद्र के रास्ते पश्चिमी भारत के बंदरगाहों तक आए।
- इसी समय मध्य ऐशिया से लोग देश के उत्तर-पश्चिम प्रांतों में आकर बस गए।
- 7 वीं शताब्दी में इस्लाम के उद्भव के बाद में यह क्षेत्र इस्लामी विश्व का हिस्सा बन गए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

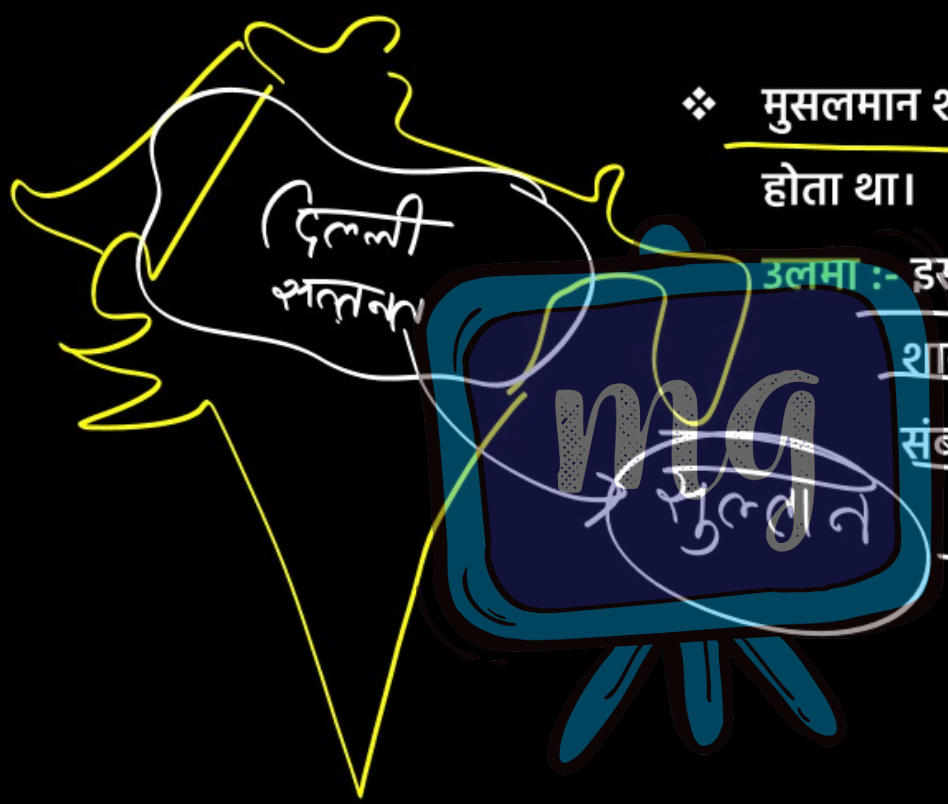
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

शासकों और शासितों के धार्मिक विश्वास

- 711 ईसवीं में मुहम्मद बिन कासिम नाम के अरब सेनापति ने सिंध को विजित कर लिया।
- बाद में तुर्क और अफगानों ने दिल्ली सल्तनत की नींव रखी।
- समय के साथ दक्कन और अन्य भागों में भी सल्तनत की सीमा का प्रसार हुआ।
- इन क्षेत्रों में इस्लाम शासकों का स्वीकृत धर्म था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- मुसलमान शासकों को उलमा के मार्गदर्शन पर चलना होता था।

उलमा :- इस्लाम धर्म के ज्ञाता थे।

शासन के धार्मिक व कानूनी और अध्यापन संबंधी जिम्मेदारी निभाते थे।

समुदायों के नाम

- हम अधिकतर हिन्दू और मुसलमान जैसे शब्दों को धार्मिक समुदायों का घोतक मान लेते हैं।
- किन्तु जिन इतिहासकारों ने आठवीं से चौदहवीं शताब्दी के मध्य संस्कृत ग्रंथों और अभिलेखों का अध्ययन किया है वे इस तथ्य को उजागर करते है कि-

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इनमें मुसलमान शब्द का शायद ही कहीं प्रयोग हुआ है।
- लोगों का वर्गीकरण उनके जन्मस्थान के आधार पर किया गया था।
  - तुर्की मुसलमानों को तुरुष्क
  - तजाकिस्तान से आए लोगों को ताजिक
  - फारस के लोगों को पारसीक नाम से संबोधित किया गया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इन प्रवासी समुदायों के लिए एक अधिक सामान्य शब्द म्लेच्छ था।

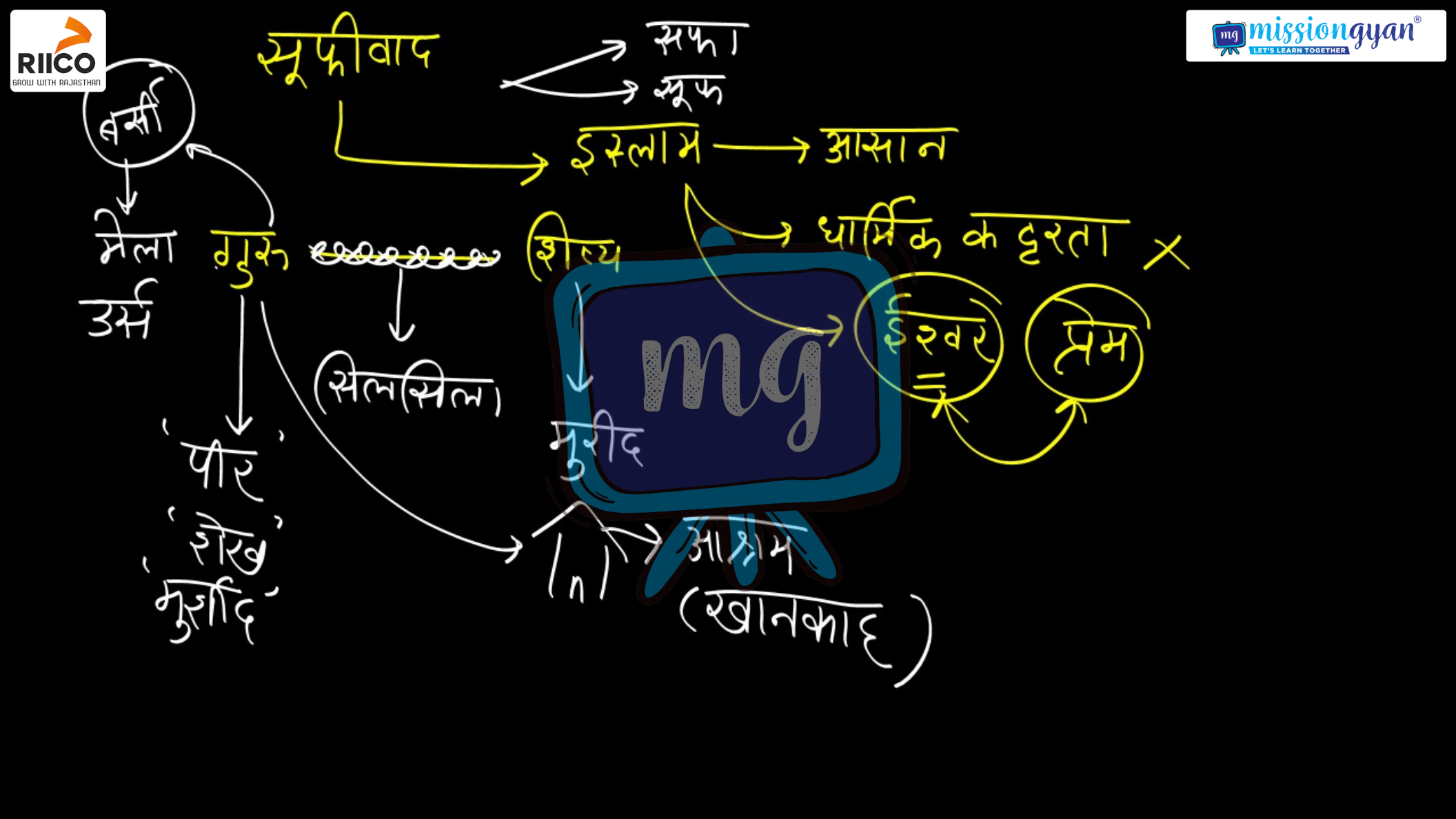
म्लेच्छ:– यह बात को इंगित करता है कि ये वर्ण व्यवस्था के नियमों का पालन नहीं करते थे। और ऐसी भाषाएँ बोलते थे जो संस्कृत से नहीं उपजी थी

सूफीवाद और तसव्वुफ़

सूफी वाद

सूफ → ऊन → चोगा

सफा – पवित्र


RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
सूफीवाद
सफा
सूफ
इस्लाम
आसान
धार्मिक कट्टरता ×
उर्स
मेला
गुरु
शिष्य
सिलसिला
पीर
शेख
मुर्शिद
मुरीद
ईश्वर
प्रेम
आश्रम
(खानकाह)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सूफीमत का विकास

- इस्लाम की आरंभिक शताब्दियों में कुछ लोगों का रहस्यवाद और वैराग्य की ओर झुकाव बढ़ा, इन्हें सूफी कहा जाने लगा।
- इन लोगों ने रुढ़िवादी परिभाषाओं तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और सुन्ना (पैगम्बर के व्यवहार) की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने मुक्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया।
- उन्होंने पैगम्बर मोहम्मद को इंसान-ए-कामिल (आदर्श मानव) बताते हुए उनका अनुसरण करने की सीख दी।
- सूफ़ियों ने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

खानकाह और सिलसिला :

- ग्यारहवीं शताब्दी तक आते-आते सूफीवाद एक पूर्ण विकसित आन्दोलन था।
- सूफी अपने को एक संगठित समुदाय-खानकाह के इर्द-गिर्द स्थापित करते थे।
- खानकाह का नियंत्रण शेख / पीर अथवा मुर्शीद के हाथ में था।
- वे अनुयायियों की भर्ती करते थे और अपने वारिस (खलीफा) की नियुक्ति करते थे।

सूफी शब्दावली

- खानकाह – सूफी संत का आध्यात्मिक क्षेत्र (आश्रम)
- शेख/पीर – गुरु
- मुर्शीद – शिष्य
- वारिस/खलीफा – उत्तराधिकारी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 12 वीं शताब्दी के आस-पास सूफी सिलसिलों का गठन होने लगा था।
- **सिलसिले का अर्थ :-** सिलसिले का शाब्दिक अर्थ है, जंजीर जो शेख और मुरीद के बीच एक निरंतर रिश्ते की द्योतक है जिसकी पहली अटूट कड़ी पैगम्बर मोहम्मद से जुड़ी है।
- पीर की मृत्यु के बाद उसकी दरगाह उसके मुरीदों के लिए भक्ति का स्थल बन जाती थी।

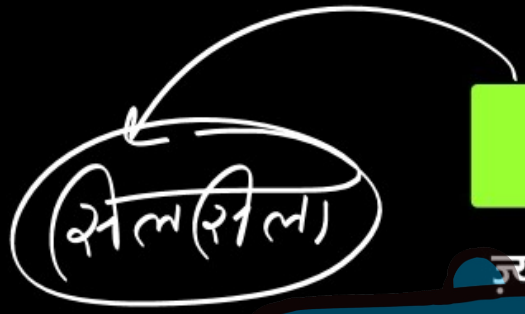
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस तरह पीर की दरगाह पर जियारत के लिए जाने की खासतौर से उनकी बरसती के अवसर पर, परिपाटी चल निकली।
- इस परिपाटी को उर्स (पीर की आत्मा का ईश्वर से मिलन) कहा जाता था।
- इस तरह शेख का वली के रुप में आदर करने की परिपाटी शुरु हुई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



सिलसिलों के नाम

ज़्यादातर सूफी वंश उन्हें स्थापित करने वालों के नाम पर पड़े। उदाहरणत:, कादरी सिलसिला शेख अब्दुल कादिर जिलानी के नाम पर पड़ा। कुछ अन्य सिलसिलों का नामकरण उनके जन्मस्थान पर हुआ जैसे चिश्ती नाम मध्य अफगानिस्तान के चिश्ती शहर से लिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

खानकाह के बाहर

- कुछ सूफियों ने खानकाह छोड़कर फकीरी जीवन अपनाया।
- वे निर्धनता और ब्रह्मचर्य को महत्व देते थे।
- शरिया न मानने वाले बे-शरिया और मानने वाले बा-शरिया कहलाते थे।

उपमहाद्वीप में चिश्ती सिलसिला

- बारहवीं शताब्दी के अंत में भारत आने वाले सूफी समुदायों में चिश्ती सबसे अधिक प्रभावशाली रहे।
- कारण :
  1. इन्होंने अपने आपको स्थानीय परिवेश में अच्छी तरह ढाला और
  2. भारतीय भक्ति परंपरा की कई विशिष्टताओं को भी अपनाया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चिश्ती सिलसिले के मुख्य उपदेशक		
सूफ़ी	मृत्यु का वर्ष	दरगाह का स्थान
शेख मुइनुद्दीन चिश्ती	1235	अजमेर (राजस्थान)
ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी	1235	दिल्ली
शेख फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर	1265	अजोधन (पाकिस्तान)
शेख निज़ामुद्दीन औलिया	1325	दिल्ली
शेख नसीरुद्दीन चिराग-ए-देहली	1356	दिल्ली

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चिश्ती खानकाह में जीवन



- खानकाह सामाजिक और धार्मिक जीवन का केंद्र थी।
- शेख निजामुद्दीन औलिया की खानकाह गियासपुर में थी।
- यहाँ सहवासी, अतिथि और शेख का परिवार रहता था।
- लंगर में सभी को भोजन मिलता था।
- सभी वर्गों के लोग शेख से मिलने आते थे।
- शेख ने शिष्यों को अलग-अलग क्षेत्रों में भेजकर खानकाह स्थापित करवाईं।
- इससे चिश्ती परंपरा और शेख की प्रसिद्धि फैली।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ अन्य मिलने वालों में अमीर हसन सिजज़ी और अमीर खुसरो जैसे कवि तथा दरबारी इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी जैसे लोग शामिल थे।
- इन सभी लोगों ने शेख के बारे में लिखा
- सूफी संतों के द्वारा स्थानीय परंपराओं को आत्मसात करने का प्रयत्न किया गया जैसे-

1. शेख के सामने झुकना
2. मिलने वालों को पानी पिलाना
3. दीक्षितों के सर का मुंडन
4. यौगिक व्यायाम आदि व्यवहार इस तथ्य के घोतक।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- शेख निज़ामुद्दीन ने कई आध्यात्मिक वारिसों का चुनाव किया और उन्हें उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में खानकाह स्थापित करने के लिए नियुक्त किया।
- इस वजह से चिश्तियों के उपदेश, व्यवहार और संस्थाएँ तथा शेख का यश चारों ओर फैल गया।
- उनकी तथा उनके आध्यात्मिक पूर्वजों की दरगाह पर अनेक तीर्थयात्री आने लगे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



चिश्ती उपासना : जियारत और कव्वाली

- अजमेर में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह प्रमुख तीर्थ बनी।
- विभिन्न वर्गों के लोग यहाँ जियारत के लिए आते थे।
- अकबर भी कई बार दरगाह आया और दान दिया।
- जिक्र, समा, संगीत और कव्वाली चिश्ती उपासना के प्रमुख अंग थे।है जिन्हें 'गरीब नवाज़' कहा जाता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- 1568 में अकबर ने तीर्थयात्रियों के लिए खाना पकाने हेतुएक विशाल देग दरगाह को भेंट की। उन्होंने दरगाह के अहाते में एक मस्जिद भी बनवाई
- नाच और संगीत भी ज़ियारत का हिस्सा थे।
- सूफी संत ज़िक्र (ईश्वर का नाम-जाप) या फिर समा (श्रवण करना) यानी आध्यात्मिक संगीत की महफिल के द्वारा ईश्वर की उपासना में विश्वास रखते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

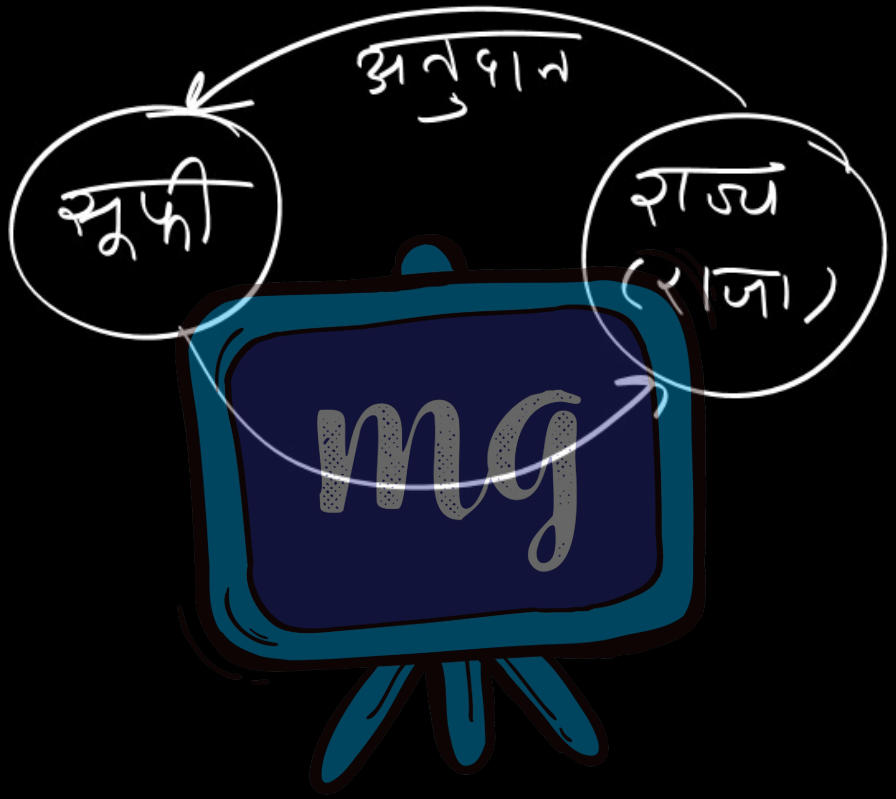
भाषा और संपर्क

- न केवल समा में चिश्तियों ने स्थानीय भाषा को अपनाया अपितु दिल्ली में चिश्ती सिलसिले के लोग हिंदवी में बातचीत करते थे।
- बाबा फरीद (खानकाह-अजोधन, पंजाब) ने भी क्षेत्रीय भाषा में काव्य रचना की जो गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है।
- मलिक मोहम्मद जायसी का प्रेमाख्यान पद्मावत पद्मिनी और चित्तौड़ के राजा रतनसेन की प्रेम कथा के इर्द-गिर्द घूमता है।

- अक्सर खानकाहों में समा के दौरान ऐसे काव्यों का वाचन होता था।
- कुछ और रचनाएँ लोरीनामा और शादीनामा के रूप में लिखी गई।
- लिंगायतों द्वारा लिखे गए कन्नड़ के वचन और पंढरपुर के संतों द्वारा लिखे मराठी के अभंगों ने भी उन पर अपना प्रभाव छोड़ा।

सूफी और राज्य

- चिश्ती संप्रदाय की एक और विशेषता संयम और सादगी का जीवन था जिसमें सत्ता से दूर रहने पर बल दिया जाता था।
- सत्ताधारी विशिष्ट वर्ग अगर बिना माँगे अनुदान या भेंट देता था तो सूफी संत उसे स्वीकार करते थे।
- सुल्तानों ने कईबार खानक़ाहों को कर मुक्त (इनाम) भूमि अनुदान में दी।


अनुदान
सूफी
राज्य
(राजा)
mg

- चिश्ती धन और सामान के रूप में दान स्वीकार करते थे किंतु इनको सँजोने के बजाय खाने, कपड़े, रहने की व्यवस्था और अनुष्ठानों जैसे समा की महफिलों पर पूरी तरह खर्च कर देते थे।
- इस तरह शेख के नैतिक अधिकार की पुष्टि होती थी और आम लोगों का उनकी ओर झुकाव बढ़ता था।
- सूफी संतों की धर्मनिष्ठा, विद्वता और लोगों द्वारा उनकी चमत्कारी शक्ति में विश्वास उनकी लोकप्रियता का कारण था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इन वजहों से शासक भी उनका समर्थन हासिल करना चाहते थे।
- जब तुर्कों ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की तो उलमा द्वारा शरिया लागू किए जाने की माँग को ठुकरा दिया गया।
- क्योंकि सुल्तान जानते थे कि उनकी अधिकांश प्रजा इस्लाम धर्म मानने वाली नहीं है।
- ऐसे समय सुल्तानों ने सूफी संतों का सहारा लिया जो अपनी आध्यात्मिक सत्ता को अल्लाह से उद्भूत मानते थे जो उलमा द्वारा शरिया की व्याख्या पर निर्भर नहीं थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यह भी माना जाता था कि औलिया मध्यस्थ के रूप में ईश्वर से लोगों की ऐहिक और आध्यात्मिक दशा में सुधार लाने का कार्य करते हैं।
- इसलिए शासक अपनी कब्र सूफी दरगाहों और खानकाहों के नज़दीक बनाना चाहते थे।
- सुल्तानों और सूफ़ियों के बीच तनाव के उदाहरण भी मौजूद हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- अपनी सत्ता का दावा करने के लिए दोनों ही कुछ आचारों पर बल देते थे जैसे-
  - झुक कर प्रणाम करना।
  - कदम चूमना।
- कभी-कभी सूफी शेखों को आडंबरपूर्ण पदवी से संबोधित किया जाता था।
- उदाहरणत शेख निज़ामुद्दीन औलिया के अनुयायी उन्हें सुल्तान-उल-मशखे (अर्थात शेखों में सुल्तान) कह कर संबोधित करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



नवीन भक्ति पंथ : उत्तरी भारत में संवाद और असहमति

कबीर 14वीं–15वीं शताब्दी के संत थे।

- उनकी वाणी बीजक, कबीर ग्रंथावली और अन्य संग्रहों में मिलती है।
- उनकी रचनाएँ कई भाषाओं व बोलियों में हैं।
- उन्होंने एकेश्वरवाद पर जोर दिया और धार्मिक रूढ़ियों की आलोचना की।
- वे परम सत्य को राम, अल्लाह, खुदा, ब्रह्म आदि नामों से संबोधित करते थे।
- कबीर के जन्म, धर्म और गुरु रामानंद से संबंध पर मतभेद हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



बाबा गुरु नानक (1469-1539)

- उन्होंने निर्गुण भक्ति और एक ईश्वर पर जोर दिया।
- कर्मकांड, मूर्ति पूजा और धार्मिक बाहरी आडंबरों का विरोध किया।
- नाम-स्मरण को ईश्वर प्राप्ति का सरल मार्ग बताया।
- उनकी वाणी पंजाबी में शबदों के रूप में प्रचलित हुई।
- उनकी परंपरा आगे गुरु अंगद और अन्य गुरुओं ने जारी रखी।
- गुरु अर्जुन ने आदि ग्रंथ का संकलन किया।
- गुरु गोबिंद सिंह ने 1699 में खालसा पंथ की स्थापना की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मीराबाई, भक्तिमय राजकुमारी

- मीराबाई (लगभग पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी) → ये संभवतः भक्ति परंपरा की सबसे सुप्रसिद्ध कवयित्री हैं।
- मीराबाई मारवाड़ के मेड़ता जिले की एक राजपूत राजकुमारी थीं जिनका विवाह उनकी इच्छा के विरुद्ध मेवाड़ के सिसोदिया कुल में कर दिया गया।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने अपने पति की आज्ञा की अवहेलना करते हुए पत्नी और माँ के परंपरागत दायित्वों को निभाने से इनकार किया और विष्णु के अवतार कृष्ण को अपना एकमात्र पति स्वीकार किया।
- वह राजभवन से निकल कर एक परिव्राजिका संत बन गई।
- कुछ परंपराओं के अनुसार मीरा के गुरु रैदास थे जो एक चर्मकार थे।
- इससे पता चलता है कि मीरा ने जातिवादी समाज की रुढ़ियों का उल्लंघन किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

शंकरदेव

15वीं शताब्दी में असम में वैष्णव भक्ति के प्रमुख प्रचारक थे।

उन्होंने विष्णु भक्ति, नाम-कीर्तन और सत्संग पर जोर दिया।

सत्र, मठ और नामघर की परंपरा को बढ़ावा दिया।

उनकी प्रमुख रचना कीर्तनघोष है।



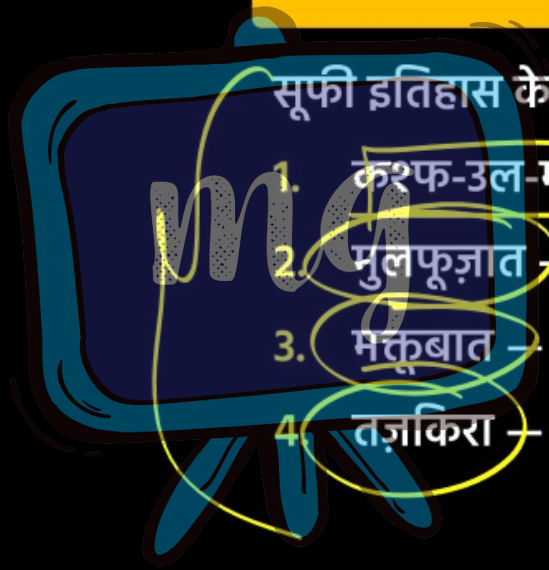
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

धार्मिक परंपराओं के इतिहासों का पुनर्निर्माण

- धार्मिक परंपराओं के इतिहास का पुनर्निर्माण
- इतिहासकार मूर्तिकला, स्थापत्य, धार्मिक कथाएँ और साहित्य जैसे स्त्रोतों का उपयोग करते हैं।
- इन स्त्रोतों की भाषा और शैली में काफी विविधता मिलती है।
- सही अर्थ समझने के लिए भाषा, शैली और संदर्भ की जानकारी जरूरी होती है।

सूफी परंपरा के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए विभिन्न स्त्रोत



सूफी इतिहास के प्रमुख स्त्रोत

1. कश्फ-उल-महजूब – सूफी विचार व आचार।
2. मुलफूज़ात – सूफी संतों की बातचीत।
3. मक्तूबात – सूफी संतों के पत्र।
4. तज़किरा – सूफी संतों की जीवनियाँ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भक्ति परंपरा

1) भक्ति आ०
2) अलवार नायनार
3) स्त्री भक्त, राज्य भाषा
4) सगुण, निर्गुण
5) महान लक्ष्य
6) संत नाम
7) कबीर, गुरु नानक जी
   मीराबाई

सूफी परंपरा

1) नाम
2) सिलसिला
3) उलेमा
4) शरिया
5) बे शरिया
6) ता शरिया
7) पीर, शेख
8) खलीफा
9) उर्स
10) खानकाह
11) स्त्रोत
12) सूफी = राज्य

mg